वार्तालाप-561, धुलावाड़ी-1 (नेपाल), दिनांक 03.05.08
Disc.CD No.561, dated 03.05.08 at Dhulawari-1 (Nepal)
Extracts-Part-1

समयः 00.40-04.20
जिज्ञासुः अभी-अभी मुरली में कहा गया कि यूरोपियन और अफ्रीकन लोग कभी 84 जन्म नहीं लेंगे।
बाबाः हाँ, युरोपियन और अफ्रीकन जो अपने धर्म के पक्के हैं।
जिज्ञासुः मगर एक हिन्दुस्तानी भाई है और एक यूरोपियन भाई है। उन दोनों में यूरोपियन भाई बहुत ज्यादा प्योर है और ज्ञानी है। तो नहीं लेगा क्या?
बाबाः वो ज्ञानी और पावर से फुल क्यों है? (जिज्ञासु - नहीं प्योर...) हाँ प्योर क्यों है और भारतवासी इम्प्योर क्यों है? क्योंकि भारतवासियों ने ज्यादा जन्म लिये हैं और दूसरे देश के वासियों ने कम जन्म लिये हैं। तो ज्यादा सुख कौन भोगता है? भारतवासी भोगते हैं देह के द्वारा या विदेशी लोग देह के द्वारा सुख भागते हैं? (किसी ने कहा- विदेशी।) विदेशी ने कम जन्म लिये है, वो ज्यादा सुख भोगते हैं? अरे! देह से ही सुख भोगा जाता है। ज्यादा जन्म हुए तो ज्यादा शरीर भी किसने लिये - भारतवासियों ने या विदेशियों ने? भारतवासियों ने ज्यादा शरीर लिये। तो ज्यादा सुख भी कौन भोगते हैं? भारतवासियों ने सुख भी ज्यादा भोगे हैं, तो दुख भी ज्यादा भोगेंगे। पतित भी ज्यादा बनते हैं भारतवासी।

Time: 00.40-04.20
Student: Just now it was said in the Murli that the Europeans and Africans will never have 84 births.
Baba: Yes, the Europeans and Africans who are firm in their religion.
Student: But suppose there is an Indian brother and a European brother, between both of them the European brother is purer and knowledgeable; so, will he not have [84 births]?
Baba: Why are they knowledgeful and powerful? (Student: No, pure...) Yes, why are they pure and why are the Indians impure? It is because the Indians have had more births and the residents of other countries have had fewer births; so who enjoy more happiness? Do the Indians enjoy more pleasure through the body or do the foreigners enjoy more pleasure through the body? (Someone said: the foreigners.) The foreigners have taken fewer births; do they enjoy more happiness? *Arey*! It is through the body that someone enjoys happiness. When they (the Indians) have had more births, then who has taken more bodies as well? Is it the Indians or the foreigners? The Indians have taken more bodies; so who enjoys more happiness as well? The Indians have enjoyed more happiness; so they will suffer more sorrow as well. The Indians also become more sinful.

शरीर से सुख भोगते-भोगते ही आत्मा पतित बनती है। अगर अपन को आत्मा समझें तो उस समय कोई सुख, दुख महसूस नहीं होता है। आत्मिक स्थिति में सुख-दुख का असर ही नहीं होता है। देह का भान होगा तो सुख भी भोगेंगे, इन्द्रियों का भान नहीं होगा तो सुख या दुख दोनों नहीं भोगे जा

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

सकते। इसीलिये विदेशी लोग कम जन्म लेते हैं तो कम पतित बने, ज्यादा सुखी हैं। उनकी सुमति है, अच्छी बुद्धि है। बुद्धि माना आत्मा रूपी बुद्धि और जिन्होनें भारतवासियों ने ज्यादा जन्म लिये हैं वो तामसी बन गये, तमोप्रधान हो गये। जैसे जिस मनुष्य की ज्यादा उम्र हो जाती है; सौ साल किसी आदमी आयु हो जायेगी तो इन्द्रियों मे सुख भोगने की ताकत रह जाती है? नहीं रह जाती। सुख भोगना भी चाहे तो नहीं भोग सकता। ऐसे ही भारतवासी जड़-जड़ीभूत बुद्धि बन पड़े हैं। वो आखिरी जन्म में सुख भोग हीं नहीं सकते ज्यादा। और विदेशों मे देखो कितना सुख लगा पड़ा है क्योंकि नई-नई आत्मायें आयी हैं। वो तामसी नहीं बनतीं हैं इतनी ज्यादा, इसीलिये सुखी हैं, सुमति है। भारतवासियों की कुमति बन गई है। मन बुद्धि रूपी आत्मा तामसी बन गई है। इसीलिये कहते हैं - "जहाँ सुमति तहाँ सम्पत्ति नाना, जहाँ कुमति तहाँ विपत्ति निधाना"। अनेक प्रकार की समस्यायें आती रहती है। भारत के ऊपर इस समय कितना कर्ज हो गया है विदेशियों का।

The soul becomes sinful only while enjoying pleasures through the body. If you consider yourself to be a soul, then at that time you do not experience any joy or sorrow; there is no effect of joy or sorrow in the soul conscious stage at all. If there is the consciousness of the body, then you will enjoy happiness as well; if there is no consciousness of the bodily organs, then you cannot experience happiness or sorrow. This is why the foreigners have fewer births; so they have become less sinful and are happier. Their intellect is good (*sumati*); their intellect is nice. Intellect means the intellect like soul and the Indians who have had more births have become sinful [and] *tamopradhan*. For example, when a person grows old... suppose someone is hundred years old, do his organs have the power to enjoy pleasure? No. Even if he wishes to enjoy pleasure, he cannot. Similarly, the intellect of the Indians has become dilapidated. They cannot enjoy more joy in the last birth at all. And look there is so much happiness in the foreign countries because those souls have come newly (from the soul world); they do not become much impure; this is why they are happy, their intellect is good. The intellect of the Indians has become bad (*kumati*). The mind and intellect like soul has become impure. This is why it is said: *jahaan sumati tahaan sampatti nana aur jahaan kumati tahaan vipatti nidhana* (where there is wisdom, there is prosperity and where there is stupidity, misfortune prevails there.). Different kinds of problems keep on emerging. The Indians are greatly indebted to the foreigners at present.

समयः 04.22-07.30

जिज्ञासुः बाबा, इस संगमयुग के पुरुषार्थ अनुसार सतयुग में जन्म होगा। राजा क्वालिटी की आत्मायें, धनाड्य प्रजा की आत्मायें और दास-दासी की आत्मायें होती है। एक तरफ ऐसा बोला है। दूसरी तरफ बोला है प्रकृति दास-दासी होती है सतयुग में। तो अगर अभी के पुरुषार्थ अनुसार दास-दासी उस टाइम होंगे तो प्रकृति दासी होने का तो मतलब ही नहीं है।

बाबाः नहीं। बाप हम बच्चों को 21 जन्म का सुख देने आये हैं या बीस जन्म का सुख देने आये हैं? (जिज्ञासु-21 जन्म।) सतयुग में कितने जन्म होंगे? (जिज्ञासु-21 जन्म।) सतयुग में कितने जन्म होंगे? आठ जन्म । और त्रेता में कितने जन्म होंगे?

जिज्ञासु: बारह जन्म होंगे।

बाबा: तो कितने हुये?

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

जिज्ञासु: बीस।

Time: 04.22-07.30
Student: Baba, we will be born in the Golden Age as per the *purusharth* (spiritual effort) made in this Confluence Age. On the one hand it has been said that there are king quality souls; souls of wealthy subjects and souls of servants and maids over there. On the other hand it has been said that nature is our servant in the Golden Age. So, if we become maids and servants there as per the present *purusharth*, then there is no meaning of nature being a servant.
Baba: No. Has the Father come to give us the happiness for 21 births or twenty births? (Student: 21 births.) How many births will there be in the Golden Age? (Student: 21 births.) How many births will there be in the **Golden Age**? [There will be] eight births. And how many births will there be in the Silver Age?
Student: There will be twelve births.
Baba: So, how many births are there [in total]?
Student: Twenty.

बाबा: इक्कीसवाँ कहाँ गया? (जिज्ञासु-संगमयुग।) हाँ, संगमयुग की बात हुये। क्या? कि हमारे भाव स्वभाव प्रकृति ही ऐसे बन जायेगी। हमारा जो भाव स्वभाव है प्रकृति है वो हमारा ऐसा बन जावेगा कि हम दुख महसूस ही नहीं करेंगे। ऐसी हमारी सतोप्रधान प्रकृति होगी आत्मा की। हमको दुख देने वाली आत्माओं से वास्ता ही नहीं पड़ेगा। जब हम नारायण बन जावेंगे, तो दुखी वायुमण्डल के बीच में दुखी मनुष्यों के बीच में हम रहेंगे क्या? रहेंगे? नहीं रहेंगे। ये सतयुग की बात नहीं बतायी। सतयुग में देवतायें होते हैं। देवताओं का ग्रेड ऊँचा या ब्राह्मणों का ग्रेड ऊँचा? ब्राह्मणों का ग्रेड ऊँचा है। बाप हमको सम्पूर्ण ब्राह्मण बनाने के लिये आये हैं। सम्पूर्ण ब्राह्मण सतयुग का सुख भोगेंगे उतरती कला वाला या संगमयुग का चढ़ती कला का सुख भोगेंगे? चढ़ती कला का सुख भोगेंगे। तो जिस प्रकृति की बात बाप बताते हैं वो संगमयुगी सुख की बात है। संगमयुगी स्वर्ग की बात है। बाप नीची स्टेज वाला हमको लक्ष्य नहीं देते हैं। सतयुग में तो उतरती कला होने लगेगी। वहाँ प्रकृति दासी होती है। जड़ प्रकृति। ग्रेड यहाँ होंगे। यहाँ हम देखेंगे कि जिन्होंने पुरूषार्थ किया है वो महाराजा बनकर के बैठे हैं, महारानी बैठी हैं और जिन्होंने पुरूषार्थ नहीं किया है। अपवित्र बने हैं और बाप की ग्लानि कराई है वो चाण्डाल का और दास-दासियों का काम यहाँ करते हुए नजर आयेंगे। नहीं समझ में आया ?
जिज्ञासु: आया।

Baba: Where did the 21st [birth] go? (Student: the Confluence Age.) Yes, it is about the Confluence Age. What? Our feelings and nature itself will become like this. Our feelings and nature will become such that we will not feel sorrowful at all. The nature of our soul will be so *satopradhan*. We will not have to deal with souls which cause sorrow at all. When we become Narayan, will we live amidst a sorrowful atmosphere, among sorrowful people? Will we stay? We will not. It was not mentioned about the Golden Age. There are deities in the Golden Age. Is the grade of the deities higher or the grade of the Brahmins higher? The grade of the Brahmins is higher. The Father has come to make us complete Brahmins. Will the complete Brahmins enjoy the happiness of the Golden Age, of descending celestial degrees (*utarti kalaa*) or will they

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

enjoy happiness of the Confluence Age, of ascending celestial degrees (*chadhti kalaa*) ? They will enjoy the happiness of increasing celestial degrees. So, the nature which the Father talks about is about the happiness of the Confluence Age, it is about the Confluence Age heaven. The Father does not give us a goal of a lowly stage. In the Golden Age the celestial degrees will begin to decline. There the nature, the non-living nature is a maid. The grades will be here; here, we will see that those who have made *purusharth* have become *maharaja* (emperor), *maharani* (empress) and those who have not made *purusharth*, who become impure and brought the defamation of the Father will be seen performing the task of *chaandaals* (the one who cremates) and servants and maids. ... (to be continued.)

Extracts-Part-2

समयः 16.05-17.37

जिज्ञासुः भगवान शिव का बर्थ प्लेस भारत लिखा है। ये भारत कोई एक व्यक्ति है या ये कोई ऊंची आत्माओं संगठन है? इसका थोड़ा राज़ हमको नहीं समझ में आया।

बाबाः भारत देश महान, मेरा भारत महान, तो महान जमीन होती है या व्यक्ति होता है? व्यक्ति अगर महान काम करेगा तो देश का नाम बाला होगा। तो पहले व्यक्ति हुआ या पहले स्थान हुआ? तीन बातें होतीं हैं- एक समय बलवान होता है, एक आत्मा बलवान होती है और एक स्थान का भी महत्व होता है। स्थान और समय इनको परिवर्तन करने वाली आत्मा है। आत्मा चैतन्य है, इसीलिये चैतन्य का विषेश गायन है। तो भारत चैतन्य भी है। पहले चैतन्य है, जिसके पुरूषार्थ से समय का परिवर्तन होता है। जड़ समय अपने आप परिवर्तन होगा क्या? जड़ स्थान अपने आप परिवर्तन हो जायेगा क्या? या परिवर्तन करने वाला चाहिये? (जिज्ञासुः चाहिये।) तो आपके प्रश्न का जवाब हो गया।

Time: 16.05-17.37
Student: It has been written [in the murli] that the birth place of God Shiva is India (*Bhaarat*). Is this *Bhaarat* some person or is it the gathering of some great souls? I did not understand its secret.
Baba: [People say:] "India is great; My India is great"; so, is the land great or is the person great? If a person performs a great task, then the country will become famous. So, does the person come first or does the place come first? There are three things: One thing is that time is powerful; the second thing is that the soul is powerful and the third thing is that the place is also has an importance. It is the soul which transforms the place and time. The soul is living (*chaitanya*); this is why the living thing is especially praised. So, *Bhaarat* is also in a living form; first it is the living [Bhaarat] through whose *purusharth* the time is transformed. Will the non-living time change automatically? Will the non-living place transform automatically or is anyone required for transformation? (Student: [someone is] required.) So, the reply to your question has been given.

समयः 17.40-20.40

जिज्ञासुः आत्मा तो अविनाशी है।

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

बाबाः हाँ, जी।

जिज्ञासुः इसलिए मरता नहीं। लेकिन भक्ति में कहते हैं कि आदमी मर जाता है शरीर छोड़ने के बाद। फिर शरीर छोड़ने के बाद जो संस्कार करते हैं वो जरूरी है कि नहीं?

बाबाः संस्कार और कर्मकाण्ड... ये भारत में जो जनसंख्या है उसमें से ढ़ेर लोग क्रिश्चियन हैं और ढ़ेर लोग मुसलमान हैं, ढ़ेर लोग सिक्ख हैं। दूसरे-दूसरे धर्मों के ढ़ेर लोग भारत में रहे पड़े हैं; और अकेला भारत ही तो दुनियाँ में नहीं है। सैंकड़ों विदेश हैं, जहाँ दुनियाँ की बड़ी-बड़ी आबादी रही पड़ी है मनुष्यों की। क्या वो लोग कर्मकाण्ड करते हैं? मरने के बाद कर्मकाण्ड करते हैं? नहीं करते ना । जो कर्मकाण्ड भारतवासी करते हैं वो कर्मकाण्ड वो लोग करते हैं क्या? नहीं करते ना। तो उनकी दुगर्ति हो जाती क्या? वो तो और अच्छे-अच्छे महल माड़ियाँ अटारियाँ बनाते जा रहे हैं, और अच्छा उन विदेशों में स्वर्ग बनता जा रहा है।

Time: 17.40-20.40
Student: The soul is imperishable.
Baba: Yes.
Student: This is why it does not die. But it is said in *bhakti* that a man dies after he leaves his body. Then is it necessary to perform the last rites (*sanskar*) after he leaves the body?
Baba As regards the *sanskar* (last rites) and *karmakaand* (rituals)... the population of India includes a lot of Christians, lots of Muslims, lots of Sikhs [and] numerous people of other religions are living in India. And India alone does not exist in the world; there are hundreds of foreign countries, where large population of people of the world resides; do they perform last rites? Do they perform last rites after someone dies? They do not perform, do they? Do they perform the rituals in the same way as the Indians (i.e. Hindus) do? They do not, do they? So, do they undergo degradation? They are building even more luxurious palaces, multi-storied buildings and mansions. Heaven is being created even more in those foreing countries.

और भारतवासी क्यों ऐसे नीचे गिरते जा रहे हैं? ये सब धतिंग चल रहा है। चाहे भारत में हो और चाहे विदेशों में दूसरे धर्मों में हो, ये सब गुरूओं ने वितण्डावाद फैलाया हुआ है। मनुष्य आत्मा की सच्ची गति किस रीति होगी वो कोई नहीं जानता । ये सिर्फ परमपिता परमात्मा ही अब आकर के बता रहा है। ये सब कर्मकाण्ड झूठे हैं, रावण सम्प्रदाय के फैलाये हुए हैं। इनसे दुगर्ति हुई है समाज की, विश्व की। और सदगति अगर करना है तो जो सच्चा बाप, सत्त गुरु इस सृष्टि पर आया हुआ है उसको पहचानो और उसके रास्ते पर चलो। और कोई कर्मकाण्ड काम आने वाला नहीं है। ये भक्तिमार्ग मुर्दाबाद होने वाला है। दुनियाँ में जो भी मन्दिर, मस्जिद, गिरजाघर, गुरूद्वारे हैं मनुष्य गुरूओं के चलाये हुए और मनुष्य गुरू जिन पर काबिज हैं वो सब खल्लास हो जावेंगे। एक ही बड़ा मन्दिर रह जावेगा, जहाँ सबकी बुद्धि जावेगी।

And why are the Indians experiencing downfall like this? All this just a show-off that is going on. Whether it is India or in the other foreign countries; the gurus have spread such irrational criticism. Nobody knows that how the soul will achieve true salvation (*sacchi gati*). It is the Supreme Father Supreme Soul alone who has now come and is telling [us]: all these rites and rituals are false; they have been spread by those belonging to the Ravana community. These

have led to the degradation of the society, of the world. And if you have to bring [your] true salvation, then recognize the true Father, the true Guru who has come in this world and follow His path. No other rite and ritual is going to prove useful; this path of *bhakti* is going to be *murdabad* (brought down); all the temples, mosques, churches [and] *gurudwaras*[1] in the world, which have been established by the human gurus and which are controlled by human gurus are going to perish and only one big temple will survive. Everybody's intellect will go there.

समय: 20.40-22.55

जिज्ञासु: बाबा, घर में बेटा, बेटी है। अगर उन्होनें भठ्ठी नहीं की है और भंडारे के लिए पैसे देते हैं....।

बाबा: लेकिन बाबा ने तो आपको बोला हुआ है: मांगने से मरना भला। आप ऐसा धन्धा क्यों करते हैं? बच्चा हो, बच्ची हो, सम्बन्धि हो, कोई भी हो, बाबा ने आपको कहा कि आप भीख मांगो? क्यों मांगते हैं आप उनसे भीख?

जिज्ञासु: वो पैसा देता है कि भंडारे में डालो। ऐसा करने से....

बाबा: क्यों मांगते हो? बाबा कहता है कि तुम भंडारे के लिए भीख मांगो?

जिज्ञासु: नहीं मांगने से भी देता है तो?

बाबा: हाँ, नहीं मांगने से देता है तो लो। तुम्हारा हक है। जो घर परिवार की प्रॉपर्टी है उसमें आपका हक है। आप चाहे तो कोर्ट से भी लड़ करके ले सकते हैं। लेकिन ये सब करने की दरकार नहीं है। क्यों? क्योंकि हमको तो निश्चय है कि धर्मराज बाप आया हुआ है। एक-2 की 100-2 गिनावेगा। क्या? नहीं निश्चय है? निश्चय विश्वास है कि नहीं?

जिज्ञासु: विश्वास है।

Time: 20.40-22.55
Student: Baba, there is a son and a daughter at home. Suppose, they haven't done the *bhatti* and give money for the *bhandara*[2]...
Baba: But Baba has indeed told you: It is better to die than to ask for something. Why do you do such a business? Whether it is your son, daughter, relative [or] anyone, has Baba told you to beg? Why do you beg from them?
Student: They give money [saying:] donate this in the *bhandara*. If we do this...
Baba: Why do you ask for it? Does Baba ask you to beg for the *bhandara*?
Student: What if they give even if we don't ask for it?
Baba: Yes, if they give even if you don't ask for it, then take it. It is your right. You have a right to the property of the family. If you wish, you can even go to the court, fight for it and take it. But it is not necessary to do all this. Why? Because we have faith that the Dharmaraj Father has come. He will make them pay hundred times for one mistake. What? Don't you have faith? Do you have this faith and belief or not?
Student: We have faith.

[1] Place of worship of the Sikhs.
[2] Donation box

बाबा: दुनिया के जो बड़े-2 जज है, न्यायाधीश है, न्यायालय है वो हज्जामों के कोर्ट है। वो फैसला नहीं करेंगे तुम्हारा। कौन फैसला करेगा? एक शिवबाबा ऐसा आया हुआ है जो एक-2 आत्मा का वारा न्यारा करके जायेगा। तो क्यों भीख मांगते हो?

जिज्ञासु: भीख नहीं मांगने से भी देता है।

बाबा: हाँ, तो जो भीख न मांगने से देता है सो ले लो।

जिज्ञासु: वो प्राप्ति पायेगा या नहीं पायेगा? देने वाला?

बाबा: उसकी प्राप्ति के लिए भगवान ने तुमको बता दिया कि तुम्हारा पूरा का पूरा परिवार एक दिन ज्ञान में चलेगा। तो तुम क्यों चिंता करते हो? सारी जिम्मेवारी तो बाप ने अपने ऊपर ले ली। तुम निश्चिंत हो जाओ ना।

Baba: The big judges of the world... the courts are the courts of barbers (*hajjam*). They will not settle your case. Who will settle your case? It is one Shivbaba who has come, who will settle the accounts of every soul. Then, why do you beg?
Student: They give even if we don't beg for it.
Baba: Yes, take it if they give even if you don't ask for it.
Student: Will he receive its fruit or not? The one who gives?
Baba: As regards their fruit, Baba has told you that your entire family will follow [the path of] knowledge one day. Then, why do you worry? The Father has taken the entire responsibility on Himself. Be carefree. .... (to be continued.)

Extracts-Part-3

समयः 22.58-27.15

जिज्ञासु: बाबा, मुरली में आया है कि 84 जन्म में ही, पतित शरीर में आता हूँ।

बाबा: चौरासीवें, एटी फोर्थ बर्थ (84th birth) में आता हूँ।

जिज्ञासु: 84 जन्म जब होगा तब उसी शरीर में....

बाबा: आता हूँ।

Time: 22.58-27.15
Student: Baba, it has been mentioned in the Murli: I come in a sinful body only in the 84^{th} birth .
Baba: I come in the 84^{th} birth.
Student: When that body is in its eighty fourth birth….
Baba: Then I come.

जिज्ञासु: तब सेवकराम का कौनसा जन्म हुआ?

बाबा: चौरासीवाँ।

जिज्ञासु: और अभी रामवाली आत्मा का कौनसा जन्म है?

बाबा: चौरासीवाँ ही जन्म चल रहा है क्योंकि जब जन्म लेता है, परमात्मा प्रवेश करता है तो उसका नाम बदलता है। जिसमें प्रवेश करता है उसका नाम बदल देता है। नाम क्या हो गया? प्रजापिता। तो प्रजापिता ब्रह्मा की आयु कितनी होती है शास्त्रों में? अरे! ब्रह्मा की आयु कितनी? सौ साल। तो साठ-

पैंसठ साल की आयु में उसने शरीर छोड़ा और चालीस साल दूसरे। टोटल मिलाकर के जब सौ साल आयु पूरी होती है तो प्रजापिता ब्रह्मा खलास हो जाता है मृत्युलोक में। वो मन-बुद्धि रूपी आत्मा सुख में रहती है, अपने को ज्ञान के भण्डार में अनुभव करती है हमेशा, अव्यक्त हो जाती है, देहभान से परे हो जाती है। ऐसी स्टेज में उसको दुख कोई नहीं दे सकता। वो सुख ही अनुभव करती है, ज्ञान की पराकाष्ठा के आधार पर। नया जन्म हो जाता है। है तो शरीर वही। नहीं समझ में आया? यज्ञ के आदि में तो शरीर छोड़ दिया लेकिन प्रजापिता ब्रह्मा की आयु पूरी नहीं हुई। तो वो चालीस साल एड जाते हैं सन् 76 तक। चाहे रामवाली आत्मा के लिये चाहे और चाहे कृष्णवाली आत्मा के लिये सन् 87 तक वो आयु एड होती है। तो सौ साल पूरे होने के बाद मृत्युलोक में ब्रह्मा खलास हो जाता है।

Student: So, which birth was it as Sevakram?
Baba: Eighty fourth.
Student: And which birth is it now for the soul of Ram?
Baba: The eighty fourth birth is going on because when he is born, when the Supreme Soul enters him, his name changes. He changes the name of the one in whom He enters. What name did he get? Prajapita. So, what is the age of Prajapita Brahma in the scriptures? *Arey*! What is the age of Brahma? Hundred years. So, he left his body in sixty-sixty five years of age and the other forty years; totally, when he completes the age of hundred years, then Prajapita Brahma ends in the abode of death. That mind and intellect like soul remains in happiness and always experiences himself in a storehouse of knowledge; he becomes *avyakt*, he goes beyond the stage of body consciousness. Nobody can give him sorrow in such stage. He experiences only happiness on the basis of the zenith (*paraakaashtha*) of knowledge. He receives a new birth. The body is the same. Did you not understand? He left his body in the beginning of the *yagya*, but Prajapita Brahma's age was not completed; so, those forty years are added till the year 76. Whether it is for the soul of Ram or for the soul of Krishna, that age is added till the year 87. So, after the completion of hundred years, Brahma ends in the abode of death.

इसीलिये बोला कि दस वर्ष में पुरानी दुनियाँ का विनाश और नई दुनियाँ की स्थापना हो जावेगी। लक्ष्मी-नारायण का राज्य आ जावेगा। तो राज्य पहले मनबुद्धियों के ऊपर आयेगा कि पहले स्थूल के ऊपर राज्य आ जावेगा? कोई मन-बुद्धि रूपी आत्मायें हैं जो बाप को पहचान लेतीं हैं और उनके डायरेक्शन पर चलतीं हैं। ये दिलों के ऊपर राज्य होता है। दिलवाल बाप दिल के ऊपर राज्य करता है या शरीरधारियों के ऊपर राज्य करता है? किसके ऊपर राज्य करता है? "सत्ता तेरी के बिना पत्ता भी हिल सकता नहीं" चैतन्य पत्तों की बात हैं या जड़ पत्तों की बात है? कोई चैतन्य पत्ते हैं ब्राह्मणों की दुनिया में जो भगवान की श्रीमत के आधार पर ही कदम-कदम चलते हैं। जो भी कदम उठावेंगे बाप से पूछकर के उठावेंगे।

This is why it was said that the old world will be destroyed and the new world will be established in ten years. The kingdom of Lakshmi and Narayan will begin. So, will the rule begin on the mind and intellect first or on the physical bodies? There are some mind and intellect like souls which recognize the Father and follow His directions. This is ruling over the hearts; does the *Dilwala* (the lord of hearts) Father rule over the hearts or does He rule over the bodily beings? On whom does He rule? [There is a saying:] *Satta teri ke bina patta bhi hil sakta nahi* (Not even a leaf can shake without your authority); is it about the living leaves or the non-

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

living leaves? There are some living leafs in the world of Brahmins who take every step only on the basis of God's *shrimat*. They take every step after asking the Father.

तो सौ साल ब्रह्मा की आयु सन 76 में पूरी हुई और नया जन्म शुरु हो जाता है। शरीर भल साकार में हैं, परन्तु वो पहला जन्म भी है इक्कीस जन्मों में से, क्योंकि वो शरीर छोड़ने वाला नहीं है। शरीर छोड़ने वाला है? विनाशी शरीर है? (जिज्ञासुः नहीं।) हाँ और वो बाप का अकेला शरीर नहीं होगा और भी साढ़े चार लाख बाप समान आत्मायें होंगी, नंबरवार। जो शरीर नहीं छोड़ेंगी उनका वो एक्सट्रा ऑर्डिनरी जन्म कहा जावेगा। जो अंतिम जन्म भी है और सृष्टि की प्रक्रिया का पहला जन्म भी कहा जावेगा। बाकि ऐसे नहीं पचासीवाँ जन्म है। क्या?

So, Brahma's hundred year age completed in the year 76 and the new birth begins. Although the body is present in a corporeal form, it is also the first birth out of the 21 births because he is not going to leave the body. Is He going to leave the body? Is his body perishable? (Student: No.) Yes, and that father's body will not be the lone body; there will be four and a half lakh more souls like the father *number wise* (according to their ranks) who will not leave their bodies. That will be called their extraordinary birth which is the last birth as well as the first birth of the process of creation. As for the rest, it is not the eighty fifth birth. What?

समयः 27.17-28.54

जिज्ञासुः बाबा, जैसे गीतापाठशाला बाबा की बनने के बाद अगर कोई गलत कदम उठाते हैं या कन्याएं, माताएं बाप का बनके कोई गलत कदम उठाते हैं, तो कोई उपाय है उनका?

बाबाः सज़ा खायेंगी। हमको क्या चिंता?

जिज्ञासुः कोई उपाय भी तो होना चाहिये।

बाबाः उपाय क्या? उपाय यही है कि कोई अच्छा पुरूषार्थ करता है तो ऊँच पद पाता है। खराब पुरूषार्थ करता है, निन्दा कराता है तो धर्मराज के दण्ड भी खायेगा और पद भी नीच पायेगा।

जिज्ञासु: कोई उपाय तो होना चाहिये ना......।

बाबा: क्या सब सुधर जावेंगे क्या ?

जिज्ञासु: ...जैसे कोई माता, कन्या बाप का बन जाती है या फिर कोई बच्चे बाप को छोड़ देते या निकल जाते हैं, वफादार नहीं बनते तो वो तो पद तो उनका नीचा हो ही गया। लेकिन बाप तो क्षमा का सागर है ना, दया का सागर है सब कुछ है तो कोई उपाय भी तो होगा।

Time: 27.17-28.54

Student: Baba, if someone takes a wrong step after establishing a *gitapathshala* or if the virginsand mothers take a wrong step after becoming the one belonging to the Father, is there any solution for them?

Baba: They will suffer punishments. Why should we worry?

Student: There should also be a solution, shouldn't it?

Baba: The solution? The solution is that whoever makes good *purusharth* achieves a high post. If someone makes bad *purusharth*, if he brings defamation, then he will suffer the punishments of Dharmaraj and his post will also be downgraded.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

Student: There should be some solution, shouldn't there?
Baba: Will everyone reform?
Student: ... For example, some mother or virgin surrenders to the Father or if some children leave the Father or if they go out; if they do not remain loyal, then their post will certainly be downgraded. But the Father is the Ocean of forgiveness, isn't He? He is the Ocean of mercy; He is everything. So, there will certainly be some solution too.

बाबा: कहते तो हैं अगर गलती हो गई तो माफीनामा लिखो जाकर के, दुबारा भट्ठी कर लो। बाप से ज्यादा नर्म दिल तो और कोई हो भी नहीं सकता। दुनियाँ में पति को अगर कोई छोड़ देती है, दूसरे की बन जाती है, तो पति थोड़े ही दुबारा स्वीकार कर लेता है। बाहर की दुनियाँ तो नहीं स्वीकार करती। यहाँ तो बाप कितना नर्म दिल है, रहम दिल है। बोलते हैं - एक बार माफ, दो बार भी माफ कर देंगे, बाकि बार-बार थोड़े ही माफ करते रहेंगे।

Baba: He does say that if you have committed a mistake give a written apology (*mafinama*) [and] undergo the *bhatti* once again. There cannot be anyone more tender hearted (*narm dil*) than the Father. In the world if a woman leaves her husband and marries someone else, her (former) husband doesn't accept her again. The outside world does not accept. Here the Father is so tender hearted, so merciful (*rahamdil*); He says: I will pardon you once, I will pardon you twice, but I will not go on pardoning you again and again. ... (to be continued.)

Extracts-Part-4

समयः 28.56-31.35

जिज्ञासुः बाबा, 2002 में आपसे एक प्रश्न पूछा था पत्र में कि नेपाल का सबसे ऊंची जगह माउंट एवरेस्ट है। पत्र में आपका थोड़ा आन्सर मिला था। उससे उतना हमको राज़ पता नहीं हुआ। तो हद में नेपाल का माउंट एवरेस्ट हमने सुना है लेकिन बेहद में भी... तो पूर्वीय सभ्यता का प्रतीक है जो दिखाते हैं उसका राज़ क्या है?

Time: 28.56-31.35
Student: Baba, I had asked you a question in 2002, in a letter that the highest place in Nepal is Mount Everest. I received a partial answer in the letter. I could not understand the secret completely. So, we have heard about the limited Mount Everest in Nepal but in an unlimited sense.... So, what is the secret of the symbol of the Eastern civilization (*poorviya sabhyata*) that is shown?

बाबाः उसका राज यही है- एवर ईस्ट। जैसे कहते हैं एवर प्योर ऐसे ही एवर ईस्ट। एक होती है ईस्ट की सभ्यता, पूरब की सभ्यता जहाँ ज्ञान सूर्य उदय होता है और एक होती पश्चिम की सभ्यता। आज दुनियाँ में कौन सी सभ्यता चल रही है? पश्चिमी सभ्यता चल रही है। तो दुनियाँ का सूर्य अस्त होने वाला है, पुरानी दुनियाँ नष्ट होने वाली है और नई दुनियाँ का सूर्य उदय होने वाला है। वो एवर ईस्ट है, ईषान कोण है। ईषानकोण में अष्टदेवों में से जो सर्वोपरि देव है... कौन? ईश्वर। शंकर को दिखाते हैं, वो संसार में प्रत्यक्ष होने वाला है जगतपिता। वो एवर ईस्ट सभ्यता का प्रतीक है, भारतीय सभ्यता का सर्वोच्च शिखर है। समझ में आ गया?

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

जिज्ञासु: उस पर जो बर्फ है ना, उस बर्फ का राज क्या है?

बाबा: बर्फ माना दुनियाँ में कुछ भी होता रहे, उसको अनिश्चय पैदा होने वाला नहीं है, अडिग रहेगा। बुद्धि स्थिर रहेगी, बुद्धि में गरमाहट आने वाली नहीं है। अचल, अडोल, अखण्ड- ऐसी स्टेज है।

Baba: Its very secret is: ever east. For example, it is said: ever pure; similarly, it is ever east. One is the Eastern Civilization, where the Sun of knowledge rises and the other is the Western Civilization. Which civilization is spreading in today's world? The Western Civilization is spreading. So, the Sun of the world is about to set; the old world is about to be destroyed and the Sun of the new world is about to rise. He is ever east; the *eeshaan kon* (North-East direction). In the North-East direction, the highest deity among the eight deities... who? *Eeshwar* (God). Shankar is shown [in that direction] He is the Father of the world (*Jagatpita*) who is going to be revealed in the world. He is a symbol of the ever east civilization; he is the highest summit (*sarvochch shikhar*) of the Indian civilization. Did you understand?
Student: It is covered with ice, isn't it? What is the secret of that ice?
Baba: Ice (*barf*) means, whatever may happen in the world, he is not going to lose faith; he will remain unshakeable. His intellect will remain constant. The intellect is not going to become hot. His stage is *achal, adol, akhand*[3].

समयः 31.38-34.05

जिज्ञासुः शरीर बचपन में छोटा होता है। फिर वृद्धि को पाता है, युवा होता है और वृद्ध होता है। इसी प्रकार से जो आत्मा है, आत्मा का भी ऐसे ही होता है या... ?

बाबाः आत्मा कोई बढ़ने घटने वाली चीज है?

जिज्ञासु: वही बुद्धि में आया है लेकिन आत्मा जब तक छोटे शरीर में होती है तो किसी बड़े के शरीर में होने पर जैसे उसका एक्शन, मन, बुद्धि, संस्कार जिस हिसाब से कार्य करना चाहिये वो एक ही रीति से नहीं होता है। जैसे आदमी बड़ा हो जाता है तो उसका मन, बुद्धि और संस्कार उसी रीति से काम करने लगता है।

बाबा: तामसी बन जाता है। जैसे शरीर तामसी बनता है..

जिज्ञासु: बुद्धि से डिसीजन करना होता है ना बाबा। तो जो छोटा बच्चा है वो उतना डिसीजन कर नहीं पाता है।

बाबा: तो देवतायें डिसीजन करते हैं क्या? देवतायें मनन चिंतन मंथन करते हैं क्या? छोटा बच्चा मनन चिंतन मंथन करता है? तो देवतायें हैं सृष्टि का बचपना और कलियुगी दुनियाँ है वृद्धावस्था, जिसमें मन बहुत चलायमान होता है, मन और बुद्धि बहुत तीक्ष्णगति से काम करती है।

Time: 31.38-34.05
Student: The body is small in the childhood. Then it grows, it becomes young and then grows old. Similarly, does the soul pass through these stages or...?
Baba: Is a soul something that increases or decreases?
Student: That is what I thought. But as long as the soul is in a small body then the way in which he should act, the way in which his mind, intellect and sanskars should work as an adult is not

---
[3] Unshakable, immovable, steady

the same. Just as when a person becomes an adult his mind, intellect and sanskars work accordingly.
Baba: It becomes impure. Just like body becomes impure....
Student: Baba, there are decisions that we have to make, aren't there? So, a small child is unable to take a decision.
Baba: So, do the deities make decisions? Do the deities think and churn? Does a small child think and churn? So, the deities are the childhood of the world and the Iron Age is the old age in which the mind becomes very inconstant and the mind and intellect works very fast.

जिज्ञासु: बाबा मेरे कहने का तात्पर्य यह है कि जैसे कोई छोटा बच्चा अगर भट्ठी करने के लिये जाता है तो उसको कुछ समझ में नहीं आता है। लेकिन उसमें भी आत्मा तो है। तो बड़ा आदमी में भी आत्मा है और छोटे में भी आत्मा है तो इसका रिलेशन क्या है ये जरा समझना है।
बाबा: लेकिन जो छोटा बच्चा भट्ठी करने जाता है और पहली बार बाप से मिलता है तो छोटे बच्चे की बुद्धि में बाप की याद ज्यादा अच्छी छपती है या जिनकी बुद्धि में विकार भरे पड़े हैं उनकी बुद्धि में याद ज्यादा अच्छी छपती है? (किसी ने कहा-छोटे बच्चे की बुद्धि में।) ऐसे ही है। छोटे बच्चे महात्मा कहे जाते हैं।

Student: Baba, I mean to say that if a small child goes to attend the *bhatti*, he understands nothing, but it does have a soul. So, the soul is present in a grown-up person as well as a small child; so, what is its relation? I wish to understand this.
Baba: But the small child who goes to attend the *bhatti* and meets the Father for the first time; then does the remembrance of the Father leave a better impression on the intellect of a small child or does it leave a better impression on the intellect of those who are have vices filled in their intellect ? (Someone said: in the intellect of the small child.) It is a similar case. Small children are called *mahatmas* (great souls). ... (to be continued.)

Extracts-Part-5

समयः 34.10-36.05
जिज्ञासु: बाबा, सबके राज़ खुल जाएंगे अंत में।
बाबा: हाँ। जो अभी अपना पोतामेल छिपा रहे हैं, ब्राह्मण बनकर बैठे हुये हैं, बाप के बच्चे अपने को बताय रहे हैं, उल्टे-पल्टे काम भी करते जा रहे हैं, समाज की नजरों में धूल झोंक रहे हैं, ब्राह्मणों की नजरों मे धूल झोंक रहे हैं और बाप से भी पोतामेल छिपाय रहे हैं अंत में ऐसा समय भी आयेगा चाहे कितना भी बड़ा महारथी हो, दीदी-दादी या दादा ही क्यों न हो उसकी भी पोल-पट्टियाँ सारी खुल जावेगीं। इस ब्राह्मणों के यज्ञ में किसी की भी दबी, ढ़की नहीं रहेगी, सब प्रत्यक्ष हो जावेगा।
जिज्ञासु: बाप अपने मुख से खोलेंगे या मुरलियाँ खोलेंगी?
बाबा: बाप काहे के लिय...? माहौल ऐसा बनेगा, जिन आत्माओं के साथ जो दुष्कर्म हुए हैं वो आत्मायें अपने मुँह से बोलने लग पड़ेगी बाप के सामने, भरी सभा में।

Time: 34.10-36.05
Student: Baba, everybody's secrets will be revealed in the end.
Baba: Yes, those who are hiding their *potamails* now; they are sitting as Brahmins; they call themselves the Father's children; they are also going on performing opposite tasks; they are duping the society, they are duping the Brahmins and they are also hiding the *potamail* from the Father; in the end such a time will also come when howevermuch big *maharathi* or *didi dadi* or *dada* someone may be, even their secrets will be revealed. Nothing of anyone in this *yagya* of Brahmins will remain hidden; everything will be revealed.
Student: Will the Father reveal it with his own mouth or will the Murlis reveal it?
Baba: Why will the Father reveal? The atmosphere will become such that the souls with whom they have performed wicked acts will start speaking automatically in front of the Father openly.

जिज्ञासु: अपने आप?

बाबा: हाँ, जैसे बाबा जिसको कहते हैं कचहरी। आदि में भी कचहरी होती थी। भरी सभा में सब सब अपनी-अपनी कथा कहानियाँ बताने लग पड़ते थे। वो आदि में होता था अभी नहीं होता है। अंत मे ऐसा ही होगा जब बाप ऊपर पूरा निश्चय बैठ जावेगा कि बाप छत्रछाया मुआफिक हमारे पास है, हमारे ऊपर सदा है बाप की छत्रछाया हमारा कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता। तो धड़ाके से बैठकर के बोलेंगे, कि इन्होनें हमारा सत्यानाश किया। इसीलिये मुरली में बोला है- अपना पूरा सच्चा 100% पोतामेल देने वाला कोई कोटों में एक है। यह कोई साधारण बात नहीं है।

Student: Automatically?
Baba: Yes; for example what Baba calls *kachahari* (court). *Kachahari* used to be held in the beginning (of the *yagya*) as well. Everyone used to start narrating their story in openly. That used to take place in the beginning. It is not held now. It will happen just like this in the end. When they develop complete faith that the Father is with us like a canopy (*chatrachaya*); the Father's canopy is always on us; nobody can bring any harm to us, then they will speak without fear: this one has ruined me. This is why it has been said in the Murli: There is one among crores (billions) who gives his complete, true, 100 percent *potamail*. This is not an ordinary thing.

समय: 36.08-39.54

जिज्ञासु: बाबा, धर्मराज की सज़ाएं कब शुरु होंगे?

बाबा: इंतजार कर रहे हो? बाबा ने तो कहा- "इंतजार नहीं करो इंतजाम करो" ताकि धर्मराज की सजाओं से बच जाओ।

जिज्ञासु: इसका विशेष तो विशेष उपाय क्या है जो बच जायें?

बाबा: आठ की लिस्ट में आ जाओ। अभी तो टू लेट का बोर्ड नहीं लगा है। लेट हुआ है, लेकिन अभी टू लेट का बोर्ड नहीं लगा है। अभी भी आठ की लिस्ट में कोई भी आ सकते हैं।

जिज्ञासु: इसका विशेष पुरूषार्थ क्या है आठ की लिस्ट का?

बाबा: विषेश पुरूषार्थ? अभी तक विशेष पुरूषार्थ ही नहीं समझ पाया कि ब्राह्मण जीवन में क्या पुरूषार्थ करना है?

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

Time: 36.08-39.54
Student: Baba, when will the punishments of Dharmaraj begin?
Baba: Are you waiting for it? Baba has said: Do not wait (*intazaar*), make preparations (*intazaam*) so that you are saved from the punishments of Dharmaraj.
Student: What is the most special method to save ourselves?
Baba: Enter the list of eight. The board of too late has not yet been displayed. It is late, but the board of too-late has not yet been displayed. Even now anyone can come in the list of eight.
Student: What is the special *purusharth* required for being included in the list of eight?
Baba: Special *purusharth*? Have you not yet understood what *purusharth* you have to make in the Brahmin life?

जिज्ञासु: आठ के लिये विशेष ते विषेश पुरूषार्थ?
बाबा: आठ के लिये पहला पुरूषार्थ तो वही है जो रिजल्ट बता दिया; नष्टोमोहा स्मृतिलब्धा। लोहे और सोने की जंजीरें भी लग जातीं है। क्या? लोहे की जंजीरे ज्यादा खतरनाक होतीं हैं या सोने की जंजीर ज्यादा खतरनाक होती है? (किसी ने कहा - लोहे की जंजीर।) लोहे की जंजीर खतरनाक होती है? ज्यादा कास्टली कौन सी होती है? (सभी ने कहा - सोने की।) हाँ, ब्राह्मण बनने के बाद आपस में सोने की जंजीरें पकड़ लेती हैं, जो आगे नहीं बढ़ने देती। पदार्थों की जंजीरें लग जाती हैं, आत्माओं की जंजीरें लग जातीं है। इन सब से नष्टोमोहा। आठ का विशेष पुरूषार्थ ही यह होगा। क्या? नष्टोमोहा स्मृतिलब्धा। ऐसे तो हर आत्मा का पहला पेपर यही है। क्या? पहला और आखिरी पेपर क्या होगा? फाइनल पेपर क्या होगा? नष्टोमोहा स्मृतिलब्धा। काहे से नष्टोमोहा? अपनी देह से नष्टोमोहा, जैसा रूखा-सूखा मिले ईश्वरीय मत पर श्रीमत के आधार पर जैसा भी मिलेगा हम अपने तन की परवरिश कर लेंगे।

Student: What is the special *purusharth* for eight?
Baba: The first *purusharth* for the eight is the very one [on the basis of which] the result was announced: *Nashtomoha smritilabdha*[4]. You get into the chains of iron and gold as well. What? Are the chains of iron more dangerous or the chains of gold more dangerous? (Someone said: the chains of iron.) Are the chains of iron more dangerous? Which one is more costly? (Everyone said: Golden chains.) Yes, after becoming Brahmins you get entangled in golden chains with each other, which do not allow you to go ahead. You become entangled in the chains of materials; you become entangled in the chains of souls; you have to be *nashtomoha* from all these. The special *purusharth* of the eight will be this. What? *Nashtomoha smritilabdha*. In a way the first [test] paper for every soul is this; what? What will be the first and last paper? What will be the final paper? *Nashtomoha smritilabdha*. *Nashtomoha* from what? *Nashtomoha* from your body: "We will sustain our body with whatever kind of plain or simple food we get on Godly (*ishwariya*) directions, on the basis of *shrimat*.

सबसे ज्यादा प्यार किससे होता है? अपने तन से। सम्बन्धियों से ज्यादा प्यार होता है या अपने शरीर से पहला प्यार होता है? शरीर सबसे ज्यादा प्यारा होता है। तो इस तन से नष्टोमोहा। वो अष्टदेव जितना नष्टोमोहा अपने तन से देखने में आवेंगे उतने और कोई देखने में नहीं आवेंगे।

[4] Conquering attachment and regaining the awareness of the self and the Father

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

और कहेंगे "हमारे पास दस रूपये बचे रहे। वक्त जरूरत काम में आवेंगे"। वो कहेंगे "अरे, हम तो सरेण्डर हो गये, हम अपने पास पैसे क्यों रखें? भगवान की बदनामी है कि भगवान के बच्चों को भी कुछ नहीं मिलता"। दस रूपया भी अपने पास नहीं रखेंगे। कोई साबुन का भण्डार अपने पास रख लेते हैं, सरेण्डर होने के बाद। कोई महल-माड़ियाँ मकान बना कर के अपनी बगल में रखते हैं। पता नहीं विनाश होगा कि नहीं होगा। तो पदार्थों से मोह, देह से मोह, देह के सम्बन्धियों से मोह, चाहे वो लौकिक हों और चाहे अलौकिक हों उन सब से नष्टोमोहा। यही पुरूषार्थ तो मुख्य है।

जिज्ञासु: स्वभाव संस्कार...?

बाबा: पुराने स्वभाव संस्कार उनसे भी नष्टोमोहा। जो मालूम है ये श्रीमत के बरखिलाफ स्वभाव-संस्कार है, हमारा नहीं है, हमारे बाप को पसंद नहीं है, तो त्याग देना चाहिये।

Whom do you love the most? Your body. Do you love your relatives more or do you love your body first? You love your body the most. So, become *nashtomoha* (detached) from this body. Nobody else will be seen to be *nashtomoha* from their body as much as the eight deities. Others will say: "We should have ten rupees with us so that it proves useful in times of need. They (i.e. the eight deities) will say: "*Arey*, we have surrendered [ourselves]; why should we keep money with us? It will be a cause of disrepute for God that even God's children do not get anything". They will not keep even ten rupees with them. Some keep a stock of soaps with them after surrendering. Some build palaces, buildings and mansions and keep with them [thinking:] "Who knows whether destruction will take place or not". So, they will be *nashtomoha* from the things, from the body, from the relatives of the body, whether they are *lokik* or *alokik* [relatives]. This itself is the main *purusharth*.

Student: Nature and *sanskars*...?

Baba: [They will be] *nashtomoha* from the old nature and *sanskars* as well. When you know that this nature and *sanskar* is against the *shrimat*; it does not belong to us; it is not liked by our Father, then you should renounce it. ... (to be continued.)

Extracts-Part-6

समयः 39.55-41.22

जिज्ञासुः बाबा, हम कोई नए बच्चे को संदेश देंगे – बाबा आया हुआ है और विनाश हो रहा है, तब खान-पान के बारे में भी बोलते हैं – ये-ये खाना नहीं है। ये प्याज लहसुन वगैरह-वगैरह। इसका क्या कारण है? हम तो बोलते हैं- तामसी खाना है। तो बो बोलते हैं इसका कारण क्या है? असली कारण तो बताओ।

बाबाः प्याज-व्याज छोड़ने के लिये, मूली-ऊली खाने के लिये इसीलिये मना किया हुआ है कि ये इन्द्रियों में उत्तेजना लाते हैं। इन्द्रियों मे उत्तेजना आयेगी तो काम विकार बढ़ेगा या घटेगा? बढ़ेगा।

जिज्ञासु: वो बोलते हैं- ये तो हम खाते हैं, ये तो छोड़ नहीं सकते...।

बाबा: हाँ, तो जिनको निर्विकारी बनना होगा, जिनको काम महाशत्रु को छोड़ना होगा, वो छोड़ेगें। जिनको दोस्ती करनी होगी वो तो कहेंगे हम और माँस मछली खायें। यहाँ और लक्ष्य क्या है जीवन

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

का? पवित्र बनने का लक्ष्य है या कोई और दूसरा लक्ष्य है? (जिज्ञासु- पवित्र बनने का लक्ष्य है।) तो लक्ष्य कब प्राप्त करेंगे? जब लक्षण धारण करेंगे तभी ना। लहसुन प्याज खाते रहेंगे, हींग जैसे गरम पदार्थ खाते रहेंगे, तो क्या होगा? तो इन्द्रियां उत्तेजित होंगी या नहीं होगीं? फिर काम विकार बढ़ेगा या घटेगा? बढ़ेगा।

Time: 39.55-41.22
Student: Baba, if we give a message to a new soul that Baba has come and destruction is taking place; then, when we tell them about food and drinks too that they should not eat this and this. [They shouldn't eat] onion, garlic, etc. What is the reason for this? We tell them: these are impure foods. They ask for the reason behind it. [They say:] tell us the actual reason.
Baba: You have been prohibited from eating onion, radish and so on because they cause excitement (*uttejana*) in the organs. When the organs are excited will the vice of lust increase or decrease? It will increase.
Student: They say: we eat this; we cannot leave it...
Baba: Yes, those who wish to become the ones without vice, those who wish to leave the biggest enemy, i.e lust, will leave it (impure foods). Those who wish to befriend it (the enemy lust); will say: we will eat more meat and fish. What else is the goal of the life here? Is the goal to become pure or is there any other goal? (Student: We have the goal to become pure.) So, when will you achieve the goal? It will be only when you put into practice the virtues (*lakshan*). What will happen if you continue to eat garlic, onion, if you continue to eat hot food like asafoetida (*heeng*)? Will the organs become excited or not? Then will the vice of lust increase or decrease? It will increase.

समयः 41.25-41.55

जिज्ञासुः बाबा हद में तो कम्पिल मिल गया। बेहद में भी मिलना चाहिए। बेहद में उसका अर्थ क्या है?

बाबाः कम्पिल मिल गया? आपको कम्पिल मिल गया और कम्पेल करने वाला नहीं मिला? अभी नहीं मिला है, तो मिल जाएगा।

जिज्ञासुः कम्पेल भी मिला है।

बाबाः कम्पेल भी मिल गया? तो निश्चिंत रहो। वो कम्पेल करके अपना काम करा ही लेगा।

जिज्ञासुः अच्छा-अच्छा, वो ही बात है।

बाबाः हाँ।

Time: 41.25-41.55
Student: Baba, we have found Kampil in a limited sense. We should find it in an unlimited sense as well. What is its meaning?
Baba: Did you find Kampil?
Did you find Kampil and did you not find the one who compels you? If you have not yet found him, you will find him [later on].
Student: We have found [the one who] compels as well.
Baba: Have you found [the one who] compels as well? So, be carefree (*nishchint*). He will compel and get his work done.
Student: OK, ok, that's what I wanted to ask.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

Baba: Yes.

समयः 41.58-44.50
जिज्ञासुः बाबा, ये जो मुरली में बताया कि भक्तिमार्ग के संस्कार रहेंगे तो शरीर छोड़ना पड़ेगा।
बाबाः बिल्कुल।
जिज्ञासुः तो जिसके पास भक्तिमार्ग का थोड़ा सा भी संस्कार है वो अंत तक शरीर बिल्कुल छोड़ेगा?
बाबाः बिल्कुल छोड़ना पड़ेगा। नई दुनिया में जाकर के राधा-कृष्ण के रूप में ही जन्म लेगा। जन्म देने वाला मात-पिता नहीं बनेगा। देवताओं को जन्म देने वाला सर्वश्रेष्ठ ब्राह्मण नहीं बनेगा सूर्यवंशी। जन्म लेने वाला बनेगा माना रचना बनेगा, रचना की लिस्ट में आयेगा रचयिता बाप की लिस्ट में नहीं आयेगा।

Time: 41.58-44.50
Student: Baba, it has been said in the Murli: if we have the *sanskars* of the path of *bhakti*, we will have to leave our bodies.
Baba: Definitely.
Student: So, will any person who has a *sanskar* of the path of *bhakti* even to a little extent leave his body in the end without fail?
Baba: He will definitely have to leave [his body]. He will be born in the new world in the form of Radha, Krishna. He will not become the mother or father who gives birth [to them]. He will not become the most elevated Brahmin, a *Suryavanshi* who gives birth to the deities. He will become the one who is born, i.e. he will become a creation; he will be included in the list of creation; he will not be included in the list of the creator, the father.

जिज्ञासु: बाबा भक्तिमार्ग का संस्कार किस-किस को कहेंगे? ऐसे बहुत अभी दिखने में आ रहा है। जैसे - टीका लगाना, माला पहनना है, इस रीति से मुख्य-मुख्य प्वाइंट्स कैसे पता चलेगा?
बाबा: भक्तिमार्ग के कोई भी संस्कार। क्या? कोई भी निशानी दिखाई पड़ती है।
जिज्ञासु: किस-किस को कहेंगे? जैसे - टीका लगाना भी भक्तिमार्ग की निशानी है। ऐसे माला पहनना भी...।
बाबा: भक्तिमार्ग है, लेकिन कारण देखा जायेगा माला क्यों पहनता है, ब्लडप्रेशर तो नहीं आता है। तो ब्लडप्रेशर को खत्म करने के लिये कोई दवाई डॉक्टर ने बताई हो।

Student: What all are the *sanskars* of the path of *bhakti*? A lot like this is seen at present. For example, applying the *teeka* (vermillion mark), wearing necklace; how will we come to know the main points like these?
Baba: Any *sanskar* of the path of *bhakti*. What? If any indication is visible....
Student: What all will be termed as indications of the path of *bhakti*? For example, applying *teeka*, wearing necklace is also.....
Baba: It is the path of *bhakti*; but the reason why he wears it will be seen. Is he suffering from blood pressure? So, the doctor must have given some medicine to cure blood pressure.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

जिज्ञासु: जैसे अंगूठी पहनते हैं, ऐसे बहुत...
बाबा: अंगूठी पहनता है। अंगूठी भी कोई कारण से पहनी जाती है। अगर ताँबे की अंगूठी पहनता है तो जरूर शरीर को ठण्डा रखने के लिये ये उपक्रम है। बाकी कोई समझ ले ये तो अंगूठी पहनता है, जरूर मर जायेगा। (किसी ने कुछ कहा।) हाँ जी। कोई भी संस्कार अगर दिखाई पड़ता है, भक्तिमार्ग का तो शरीर जरूर छोड़ना पड़ेगा। और माताओं में तो वो संस्कार सेन्ट परसेन्ट दिखाई पड़ रहे हैं। या तो बिन्दी लगाकर दिखायेगीं या तो माँग भरेगीं या तो कान में बुन्दा जरूर रखेंगी, माला लगायेंगी। (किसी ने कहा- नहीं लगाने से बहुत हिंसा करता है।) अच्छा अगर हिंसा नहीं करेंगे तो नहीं मरेंगे? अगर वो हिंसा करना बंद कर दें तो मरेंगे नहीं? अरे! बात तो सुनो- अगर वो हिंसा नहीं करें तो मरेंगे नहीं क्या? मरेंगे कि नहीं? वो हिंसा नहीं करेंगे तो भी मरेंगे और हिंसा करेंगे तो भी मरना तो है ही। तो क्यों न श्रीमत के आधार पर मर मिटें।

Student: For example, someone wears a ring (*angoothi*)...
Baba: If he wears a ring. A ring is also worn with a reason. If someone wears a brass ring, then it is certainly for keeping the body cool. As for the rest, if someone thinks that he is wearing a ring; so he will die for sure [then it is wrong]. (Someone said something.) Yes. If any *sanskar* of the path of *bhakti* is seen then he will have to leave the body without fail. And those *sanskars* are visible among mothers cent percent; they either apply a *bindi* or apply *sindoor* or wear a nose-ring (*bunda*) for sure or they will wear a necklace☺. (Someone said: Baba, if we don't wear it, they torture us a lot.) OK, if they do not indulge in violence, will you not die? If they stop indulging in violence, will you not die? *Arey*! Do listen; if they do not indulge in violence will you not die? Will you die or not? You will die even if they do not indulge in violence and you certainly have to die even if they indulge in violence. So, why not sacrifice yourselves on the basis of *shrimat*? ... (to be continued.)

Extracts-Part-7

समयः 50.11-51.40

जिज्ञासुः बाबा, कन्या के सरेन्डर होने के बाद उनको एन.एस में ले जाते हैं तो फिर उनके लौकिक माता-पिता से मिलने भी नहीं देते।
बाबाः उन्हें पहले ही बता दिया जाता है। ये जा रही है, तुम समझ लो मर गई। क्या? जीते जी क्या हो गया? मर गया। अगर तुम्हें परेशानी हो तो अभी मिल जाओ आके। देखते हैं कन्या भी रो रही है, माँ-बाप भी तड़प रहे हैं, तो फिर नहीं लिया जाता। तो लड़की को भी लेना बेकार, वो भी फेल हो गई। और उसके माँ-बाप भी उन्होंने सरेण्डर किया ही नहीं, उनकी परीक्षा हो गयी। हाँ, आप कुछ कहना चाहते हैं? पूरी बात नहीं हुई आपकी।
जिज्ञासु: वो ही बात पूछ रहे थे।
बाबा: आपको कन्या है क्या? (किसी ने कहा - हाँ।) अरे। सरेण्डर हो गयी? (किसीने कहा- अभी सरेंडर हुई नहीं।) अच्छा अभी गई तो नहीं है? नहीं जायेगी। क्या? जब तक आप परमीशन नहीं देंगे सरेण्डर नहीं करेंगे तब तक नहीं जायेगी।
जिज्ञासु: सरेण्डर तो हो गयी।

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

बाबा: भरी सभा बठी हक्या बोल रहे ह? परीक्षा होगी ि र।

Time: 50.11-51.40
Student: Baba, when a virgin surrenders and is taken to NS; then they are not even allowed to meet their *lokik* parents.
Baba: They are informed beforehand. She is going [to NS]; you think as if she has died. What? What happened to her while being alive? She died. If you have any problem, come and meet her now. If it is observed that if the virgin is crying and the parents are also feeling restless, then she is not taken. Then it is of no use to take the daughter because she failed. And her parents also did not surrender her at all; they were tested. Yes, do you wish to ask something? You not complete your question.
Student: This was what I was asking.
Baba: Do you have a daughter? (Someone said: Yes.) Arey☺! Has she surrendered? (Someone said: she hasn't surrendered yet.) OK, has she not gone [to N.S] yet? She will not go. Unless you give permission, unless you surrender her; she will not go.
Student: She has surrendered.
Baba: It is a packed gathering. What are you saying? Then you will be tested☺.

समयः 51.42-56.15
जिज्ञासुः बाबा, तीन मूर्ति के चित्र में दो मूर्ति बठा ह। एक मूर्ति खड़ा हऔर सुप्रीम सोल का किरण दो मूर्ति में ह, एक मूर्ति में नहीं ह।
बाबाः हाँ।
जिज्ञासुः तीन मूर्ति में ऐसा हलेकिन झंा में तीनों मूर्ति में किरण ह।
बाबाः कौनसा झण्ा में?
जिज्ञासुः वो झण्ा हना।
सबने कहाः तिरंगा झण्ा।
जिज्ञासुः एवांस का झण्ा।
बाबाः तिरंगा झण्ा एवांस का बनाया हुआ हया बेसिक का बनाया हुआ ह? (जिज्ञासु- एवांस का।) तो एवांस के झण्े में ब्रह्मा का पार्टधारी, विष्णु का पार्टधारी और शंकर का पार्टधारी, तीनों पार्टधारियों के ऊपर ज्ञान की किरणें पड़नी चाहिये, एवांस ज्ञान की या नहीं पड़नी चाहिये? (किसीने कहा- पड़नी चाहिये।) तभी तो तीनों मूर्तियाँ प्रत्यक्ष होगीं। अगर विष्णु के ऊपर ज्ञान की किरणें एवांस की नहीं पड़ेगीं तो वो प्रत्यक्ष हो जायेगा? एवांस में आये बिगर विष्णु की पार्टधारी आत्मा प्रत्यक्ष हो जायेगी? होगी? नहीं प्रत्यक्ष हो सकती।

Time: 51.42-56.15
Student: Baba, in the picture of the *Trimurty*, two personalities are sitting. One personality is standing. And the rays from the Supreme Soul are falling on two personalities. It is not falling on one personality.
Baba: Yes.
Student: In [the picture of] the *Trimurty* it is like that. But in the flag, the rays are falling on all the three personalities.
Baba: In which flag?

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

Student: There is a flag, isn't there?
Everyone said: The tricolor (*tiranga jhanda*).
Student: The flag of the advance [party].
Baba: Has the tricolor flag been prepared by the advance party or the basic party? (Students: of the advance [party].) So, should the rays of knowledge, of the advance knowledge fall on all the three actors playing the part of Brahma, Vishnu and Shankar in the flag of the advance [party] or not? Only then will all the three personalities be revealed. If the rays of the advance knowledge do not fall on Vishnu, will he be revealed? Will the soul playing the role of Vishnu be revealed without entering the advance (party)? Will he be [revealed]? He cannot be revealed.

हाँ बेसिक में जो दिया हुआ है चित्र त्रिमूर्ति का उसमें विष्णु खड़ा हुआ है और उसके ऊपर किरणें नहीं दिखायीं। इसका मतलब क्या हुआ? कि ज्ञान किरण, ज्ञान सागर ब्रह्मा में भी प्रवेश करता है और शंकर में भी प्रवेश करता है लेकिन विष्णु में प्रवेश नहीं हुआ। उसको तो प्रैक्टिकल जीवन बिताना है या ज्ञान सुनना-सुनाना है? तीन मूर्तियाँ हैं। तीन मूर्तियों से बनती हैं तीन प्रकार की एडवांस पार्टी - एक है एडवांस पार्टी में प्लानिंग पार्टी, जो यहाँ बैठी हुई है रूद्रमाला में। एक है इंस्पिरेटिंग पार्टी जो प्लानिंग पार्टी वालों में प्रवेश करती है। जैसे ज्ञान चन्द्रमाँ ब्रह्मा प्रवेश करने वाला। और शंकर प्लानिंग पार्टी है या इंस्पिरेटिंग पार्टी? (किसीने कहा- इंस्पिरेटिंग पार्टी।) शंकर? इंस्पिरेटिंग माना उमंग उत्साह देने वाला, प्रवेश करके उमंग उत्साह देने वाला। ऊँचा उड़ाने वाला। जैसे मम्मा-बाबा की सोल इस समय ब्राह्मण बच्चों में प्रवेश करके पार्ट बजाय रही है कि नहीं? बजा रही है। तो वो हो गयी इंस्पिरेटिंग पार्टी और जिनमें प्रवेश कर रही हैं वो आत्मायें, वो हो गयीं प्लानिंग पार्टी, एडवांस में चलने वाले।

Yes, in the picture of the *Trimurty* shown in the basic [knowledge] Vishnu is standing and rays have not been shown on him. What does it mean? It means that the ray of knowledge, the ocean of knowledge enters in Brahma as well as Shankar, but He did not enter Vishnu. Does he have to lead a practical life or is he required to listen and narrate? There are three personalities. Three kinds of advance parties are formed by the three personalities: one is the planning party within the advance party which is sitting here in the *Rudramala*. One is the inspiriting party which enters the members of the planning party, for example the moon of knowledge, Brahma is the one who enters and is Shankar included in the planning party or the inspiriting party? Inspiriting means the one who increases the zeal and enthusiasm; the one who increases the zeal and enthusiasm by entering [in someone]. The one who makes them fly high. For example, are the souls of Mamma and Baba playing their parts by entering in the Brahmin children or not? They are playing parts; so they are the inspiriting party. And the ones in whom those souls are entering are the planning party, who follow the advance party.

और तीसरी पार्टी वो है जो प्रैक्टिकल काम करके दिखाती है। प्रैक्टिकल देवताओं की धारणा अपने में धारण करके दिखाती है, वो है विष्णु पार्टी या विष्णु। तो उसको मुँह से बोल-बोल करने की दरकार है क्या? बोल-बोल करने की दरकार ही नहीं। तो विष्णु प्रैक्टिकल में पवित्रता की स्टेज में खड़ा हुआ है। इसीलिये उसको खड़ा हुआ दिखाया गया। और ब्रह्मा को तो दाढ़ी-मूँछ है ही है। दाढ़ी-मूँछ पतित को होती है या पावन को होती है? पतित को ही होती है। मनुष्यों को होती है और मनुष्य तो सब पतित हैं। और शंकर को भी दाढ़ी-मूँछ वाला भी दिखाते हैं और क्लीन शेव निर्विकारी भी दिखाते हैं। शंकर

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

भी विष पीता हुआ भी दिखाते हैं। तो विष पीता हुआ दिखाते हैं, तो विषयी हुआ या निर्विष हुआ? संसार उसको किस रूप में देखेगा? निर्विष देखेगा कि विकारी के रूप में देखेगा? वो तो देखेगा कि विष पी रहा है। तो पवित्रता की स्टेज में वास्तव में कौन खड़ा हुआ है? (किसी ने कहा- विष्णु।) विष्णु खड़ा हुआ है। इसीलिये विष्णु खड़ा हुआ और ब्रह्मा को और शंकर को बैठा हुआ दिखाया गया। दिखाया जाता है। बाकि अंदर में कैसे हैं वो तो गुड़ जाने गुड़ की गोथरी जाने।

And the third party is the one which performs the practical task. Vishnu Party or Vishnu is the one who sets an example of imbibing the practical *dharna* of the deities. So, is there any need for them to speak through the mouth? There is no need for them to speak at all. So, Vishnu is standing in the stage of purity in practical. This is why he has been shown to be standing. And Brahma has beard and moustaches anyway. Do the sinful ones have beard and moustaches or do the pure ones have it? Only the sinful ones have it. The human beings have it. All the human beings are sinful. And Shankar is shown to have beard and moustaches and he is shown to be clean shaven, the one without vice as well. Shankar is also shown to be drinking poison; when he is shown to be drinking poison; is he vicious or the one without vice? In which form will the world see him? Will it see him as the one without vice or vicious? It will see that he is drinking poison. So, who is standing in the stage of purity in reality? Vishnu is standing. This is why Vishnu is standing and Brahma and Shankar are shown to be sitting. It is shown [just] like that. But what they are inside is known only to the incorporeal and the corporeal one[5]. (Concluded.)

……………………………………………………………………………………………

Note: The words in italics are Hindi words. Some words have been added in the brackets by the translator for better understanding of the translation.

[5]*Gur jane, gur ki gothri jane*- Only the jaggery and the sack of jiggery knows it

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info